पिट्स

आर.एन.आई. ३८१३९/८१

www.pits.co.in

वर्ष २९ अंक-३८ सोमवार, ११ मई २००९ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये इंदौर, मुंबई से एक साथ प्रकाशित

सितारों के मामले में फिसड्डी कांग्रेस

आम चुनावों में मतदाताओं को लुभाने के लिए राजनैतिक दलों द्वारा तरह तरह के हथकंडे अपनाना बहुत पुराना शगल है। पिछले कुछ सालों से वॉलीवुड के रूपहले पर्दे के सितारों के माध्यम से राजनैतिक दल सियासत करते आए हैं। वर्तमान में समाजवादी पार्टी के महासचिव अमर सिह सबसे अधिक लकी कहे जा सकते हैं, क्योंकि दर्जनों अभिनेता, अभिनेत्री उनके इर्दगिर्द घूमते दिख जाते हैं। अमिताभ बच्चन के करीबी माने जाने वाले अमर सिंह अंततः संजय दत्त को भी राजनीति में लाने में सफल हो गए। कांग्रेस ने जब मुन्ना भाई के सरिकट अर्थात अरशद वारसी पर डोरे डाले तो अमर सिंह ने एसी जुगत लगाई की सरकिट कांग्रेस से कोसों दूर खड़े नजर आए। फिर क्या था। कांग्रेस के इंतजामअली राजीव शुक्ला गुजरे जमाने की अर्थात चुकी हुई हीरोईनों पूनम ढिल्लन, मनीषा कोईराला और महिमा चौधरी के साथ घूमते नज़र आए। यह अलग बात है कि कमल नाथ ने अपने क्षेत्र में इस बार सलमान खान को लाकर जता दिया कि वे भी किसी से कम नहीं हैं। 2004 में कमल नाथ ने गोविन्दा पर दांव लगाया था।

न रह जाएं जीवाश्म बनकर

इंतजार है कि खत्म होने का नाम ही नहीं लेता है। मतदान कितना हुआ औसत या इससे भी कम.. इन्ही चर्चाओं के बीच निकले दिनों में अब खास इंतजार है 16 मई के उस दिन का जब की नतीजे हमारे सामने होगें। गांधी भाई-बहनों का ग्लैमर देखना है कि भारतीय मतदाताओं को कितना लुभा पाया है। वरूण की तीखी टिप्पणियों पर कानूनी कार्रवाही तो हुई लेकिन कही न कही राजनिती को गहरी से समझने वाले लोगों के मन में यह बात थी ही कि इस वाकये को भुनाया जाएगा. होने भी वह ही

उत्तम झंवर

लगा वरूण के बयानों को विरोधी पार्टियां बीप के साथ सुनवा रही हैं। वहीं भाजपा मान रही है कि वरूण ही उनका वह नेता है जो भविष्य में देश की बागडोर संभालेगा। गांभीर्य की बात करें तो वरूण को विरासत में यह नहीं मिला। राहुत और प्रियंका की मानिंद मैच्योरिटी का स्तर लाने में उन्हें कुछ समय तो जरूर लगेगा। पीलीभीत में एक तरफा समर्थन का दावा करने वाले वरूण जल्दबाजी में न रहें तो शायद वो सबकुछ कर पाएगें जो उनके पिता संजय गांधी नहीं कर पाए। भारत में आर्थिक स्थायित्व अब केवल सरकार के आने के बाद ही हो सकेगा।

एक तरफ चुनावी दंगल और एक तरफ आईपीएल की धूम के बीच सामान्यजन वही जीवन जी रहे हैं। आन्ध्र में सॉफ्टवेयर इंजीनियर ने शिक्षा को ताक पर रखकर महिला के साथ छेड़खानी की। कोर्ट ने उसे परिसर में झाड़ू लगाने का दण्ड दिया। हर क्षेत्र में गांधीगिरी का फैशन सा है। ऐसे में मतदाताओं के साथ किसी प्रकार की अनहोनी न हो जाए। ओबामा भारत में बाल विवाह रोकने में मदद करेंगे। मुद्दे की बात तो ये है ना कि लोगों की जो मानसिकता है उसका क्या होगा? इसे बदल सकें तो शायद अगली पीढ़ी को संस्कारों के तोहफे दे सकेंगे। अन्यथा जागरूकता लाने वालों की घटती तादाद उन्हें एक रोज किसी जीवाश्म के मानिंद रह जाएगें।

कालेधन के हमाम में हर कोई काला

सालों साल से स्विस बैंकों में भारतीय नेताओं पूंजी पतियों और भ्रष्ट अफसरों का कालाधन जमा होने के आरोप लगते रहे हैं मगर पहली बार इस मुद्दे को इतना जोर-शोर से उठाया गया है कि इस चुनाव में सभी नेता और यहां तक की सरकार भी इसके इर्द- गिर्द ही घूमती नजर आई. जहां विपक्ष ने विदेशी धन पुनः देश में वापस लाने का वादा किया वहीं सरकार ने भी कोर्ट में हलफनामा दायर कर कहा कि उसे विदेशी बैंकों में धन रखने वालों के नाम पते मिल गये हैं और वह इसे जल्द ही इस तरह स्विस बैंकों में भारतीयों का जमा धन एक बार फिर नेताओं के सर चढ़कर बोला है.

विदेशी बैंकों में जमा धन कितना और किसका है यह बताने को कोई तैयार नहीं है. यदि इसका खुलासा हो जाए तो कईयों के चेहरे बेनकाब हो सकते हैं मगर ऐसा होगा इसमें संदेह ही संदेह है. क्योंकि स्विस बैंकों में जमाधन को लेकर कांग्रेस और भाजपा दोनों ही चुप्पी साधे रहे हैं.

भाजपा और कांग्रेस दोनों ने बारी-बारी से केन्द्र की सत्ता का सुख भोग चुके हैं और यदि वे विदेशों में जमा धन वापस लाना ही चाहते हैं तो उन्हें अपनी सरकार के कार्यकाल के दौरान ही इसके लिये पहल करना होगी. लेकिन भाजपा के वेटिंग इन पीएम लालकृष्ण आडवाणी आज भले ही विधवा विलाप करें मगर जब वे देश के गृह मंत्री की कुर्सी पर बैठे थे तब इस संबंध में उन्होंने न तो एक शब्द बोला और न ही कालाधन वापस लाने के लिये कोई प्रयास ही किया. कांग्रेस का दामन भी दागदार है वह पिछले पांच वर्षों से केन्द्र में सरकार चला रही है, लेकिन हल्ला मचने पर तो सरकार हलफनामा दायर कर कालाधन वापस लाने का वादा करती है, मगर सरकार के रहते इसके लिये कोई प्रयास नहीं करती.जो सच उजागर हुआ है वह यह है कि विश्व अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा में शामिल होने से भारत सहित तमाम विकासशील देशों को उसकी भारी कीमत चुकानी पड़ रही है. उसका ही एक भयानक रूप सामने आया है. वह यह कि आम लोगों की गाढ़ी कमाई को चोरी-छिपे हमारे नेता, नौकरशाह, उद्योगपति और अपराधी विदेश ले जा रहे हैं.

यह पुराना सिलसिला उदारीकरण के दौर में अधिक तेज हुआ है. इस पर सवाल पहले भी उठते रहे हैं. उनका घोर राजनीतिकरण भी होता रहा हैं. मौके-बे-मौके सुगबुगाती और धुधुआती ऐसी बहस पर कौन और कब ठंडा पानी डाल देता रहा है यह जानना जितना दिलचस्प होगा उससे कहीं अधिक यह सवाल मौजूं हो गया है कि आखिर क्यों यह पुरानी पड़ी बहस अपनी गहरे कब्र से निकल आई है. इसका तत्काल कारण क्या चुनावी समर है?

शेष अंतिम पेज पर .....

सरकार बनाने के लिए सेंधबाजी

अभी आखिरी चरण का मतदान होना बाकी है इसके बावजूद कम मतदान से डरे राजनीतिक दलों ने सत्ता की सौदेबाजी अभी से शुरू कर दी है। एक-दूसरे को अपने साथ में लेने के लिए कोई किसी की तारीफ कर रहा है तो कोई खुलेआम समर्थन के लिए शर्त का ऐलान कर रहा है। अपनी सत्ता की दावेदारी मजबूत करने के लिए कांग्रेस ने जद-यू, तेदेपा, अन्नाद्रमुक व वामपंथी दलों से सौदेबाजी शुरू कर दी है।समाजवादी पार्टी के नेता मुलायम सिंह यादव ने कहा कि उनकी पार्टी ऐसे किसी भी गठबंधन सरकार को अपना समर्थन देगी जो उत्तर प्रदेश में मायावती की सरकार को बर्खास्त करेगा। क्योंकि यह स्पष्ट हो रहा है कि सपा के बगैर केंद्र में सरकार बनाना संभव नहीं होगा। हालांकि सपा के समर्थन के लिए उसकी इस शर्त को कांग्रेस ने तुरंत खारिज करते हुए स्पष्ट किया कि सपा की यह मांग असंवैधानिक है। सरकार बनाने के लिए नए सहयोगियों की तलाश में अभी से राजग के कुछ घटकों की ओर निगाह लगा रही कांग्रेस को अपने यूपीए के कुछ सहयोगियों के बिदकने का भी डर है। इसीलिए सरकार बनाने के लिए सारे विकल्प खुले होने की राहुल गांधी की

घोषणा के चौबीस घंटे बाद ही कांग्रेस ने यूपीए के अपने मौजूदा सहयोगियों से वफादारी निभाने की बात कही। जद-यू और वाम दलों को रिझाने की कांग्रेस की कोशिशों के बाद लालू प्रसाद और ममता बनर्जी की नाराजगी को देखते हुए पार्टी ने मौजूदा सहयोगियों को नहीं छोड़ने की प्रतिबद्धता जताई।नीतीश, वामपंथी और जयललिता पर डोरे डालनेवाले कांग्रेस महासचिव राहुल गांधी के बयानों के बाद ममता बनर्जी ने जहां कठोर एतराज जताया है, वहीं लालू प्रसाद जाहिर तौर पर इससे खुश नहीं हैं। द्रमुक ने भी अपनी धुर राजनीतिक विरोधी जयललिता के लिए कांग्रेस के मन में पनप रहे भाव को लेकर असंतोष जताने में हिचक नहीं दिखाई है। इसके मद्देनजर ही कांग्रेस प्रवक्ता अश्विनी कुमार ने बुधवार को राजनीतिक समीकरणों को लेकर दिए गए राहुल गांधी के बयानों पर पार्टी की सफाई दी। उन्होंने कहा कि संप्रग के सभी मौजूदा सहयोगियों के प्रति कांग्रेस पूरी तरह निष्ठावान है और इन्हें छोड़ने का सवाल नहीं है। सवालों के जवाब में उन्होंने लालू प्रसाद और रामविलास पासवान के साथ-साथ समाजवादी पार्टी के प्रमुख मुलायम सिंह को भी कांग्रेस और यूपीए का हिस्सा बताया।

cmyk